





जा छोड़ दिया
तुझे, लेकिन आइन्दा
से हमसे उलझने की
कोशिश मत करना।



फिर राम-रहीम प्रार्थना स्थल की ओर बढ़ गये।

सुअरो, मैं तुम
लोगों की आज तक
क्या इसीलिये खिलाता-
पिलाता रहा हूँ कि तुम
मुसीबत के समय इसी
तरह खड़े-खड़े मुझे
मार खाते देखते
रहो।

गुस्सा मत करो
जबू भइया! तुम इस
स्कूल में नये-नये दाखिल
हुए हो, इसलिये उन दोनों को
जानते नहीं। वे राम-रहीम
थे, जिनसे बड़े-बड़े बदमाश
भी डरते हैं, फिर भला तुम
तो उनके सामने चीज
ही क्या हैं?



क्या कहा?
वे राम-रहीम
थे।

हाँ जबू भइया,
इसीलिए तो हम लोग
बीच में नहीं आये।



लेकिन यह बात
तुमने मुझे पहले क्यों
नहीं बताई?

बताने का तुमने
हमें मौका ही कहाँ
दिया जबू भइया!



हुम्म! खैर,
समझ लेंगा
इस राम-
रहीम की
जोड़ी को भी।
मेरा नाम
भी जबू
उर्फ
जमदील
हूँ।

अब इन बातों को
भूल भी जाओ जबू
भइया। आओ,
प्रार्थनास्थल पर
चलते हैं। प्रार्थना
आरम्भ ही होने वाली
होगी। यदि देर से
पहुँचे तो आज के
लिये हम सब
क्लास के बाहर
कर दिये जायेंगे।

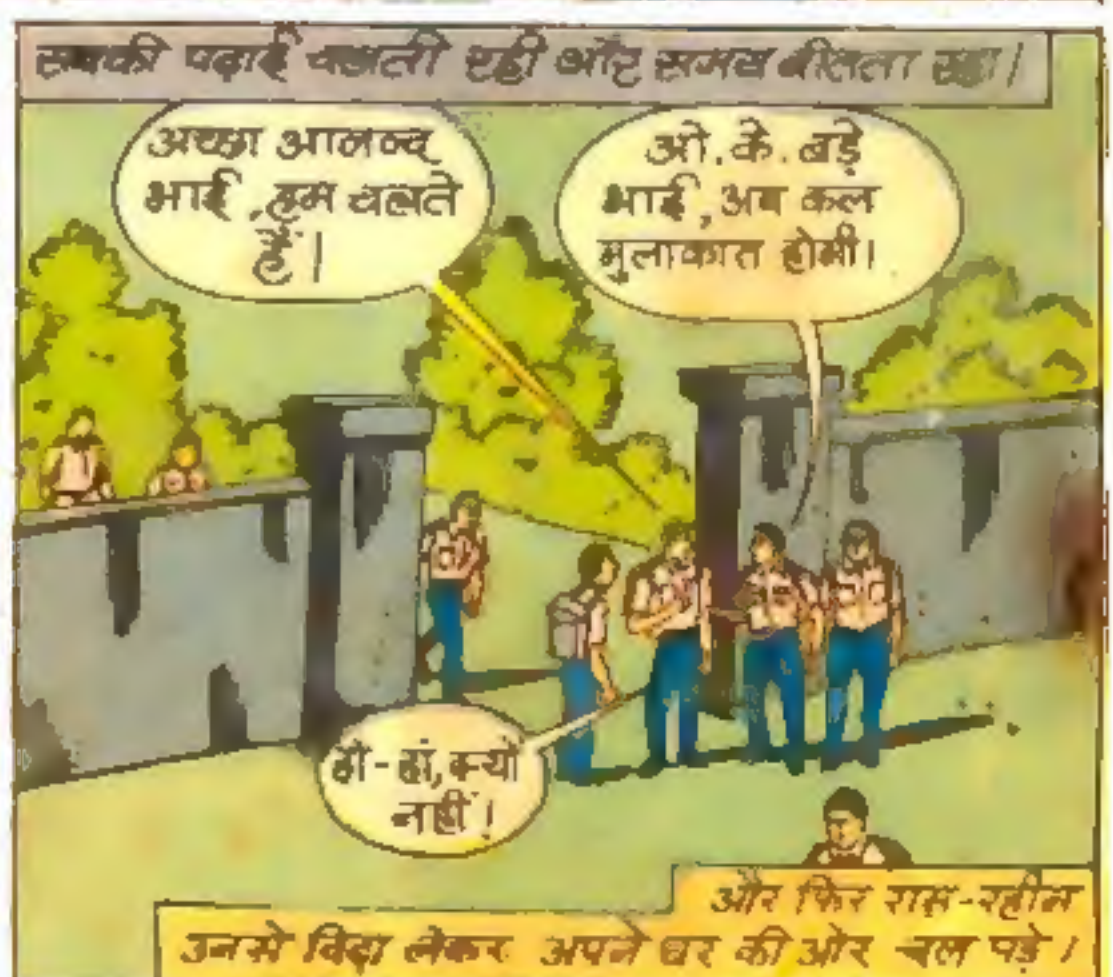


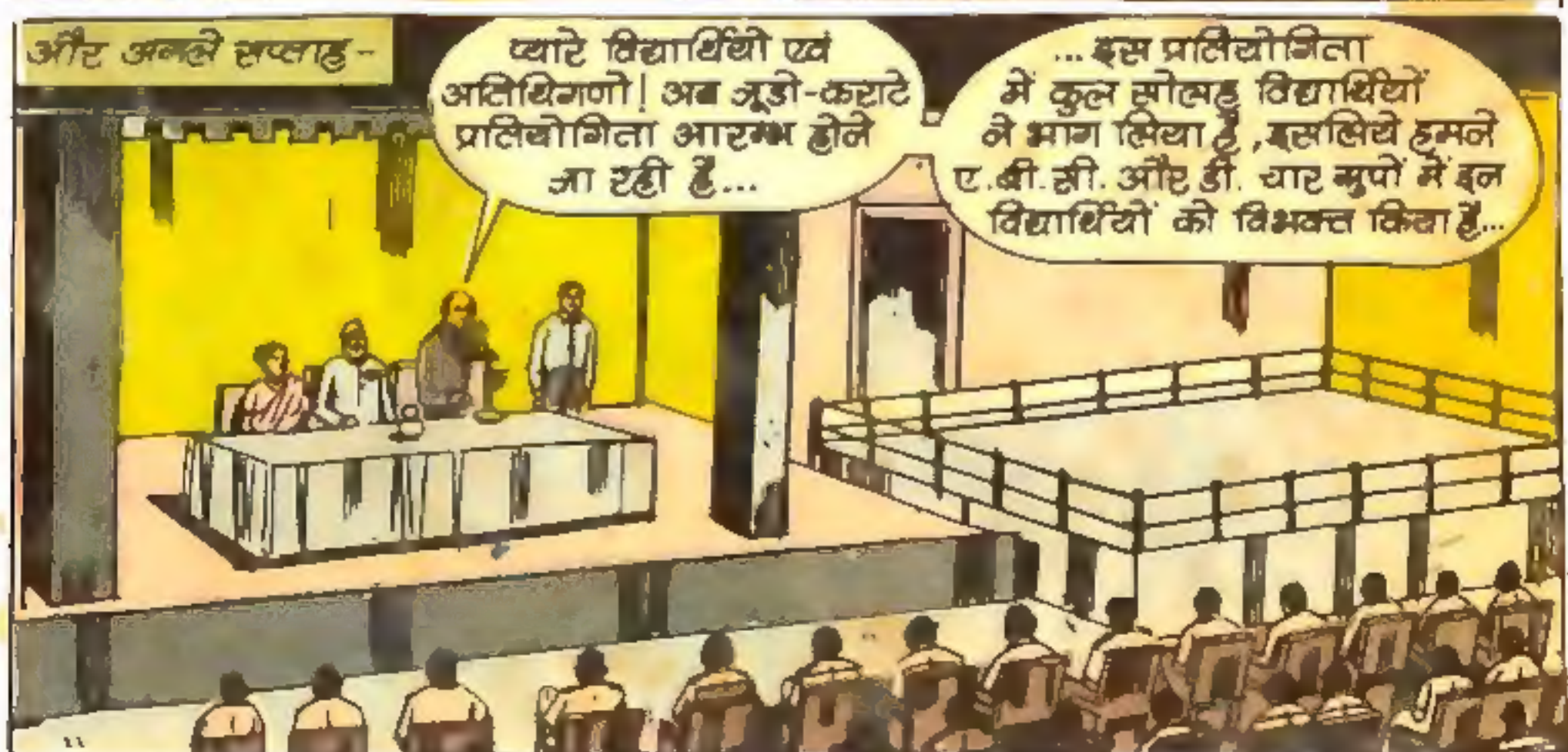
और प्रार्थना समाप्त होने के पश्चात् सभी विद्यार्थी
अपनी कक्षा में पहुँचे। राम भी रहीम के साथ जब
अपनी कक्षा में पहुँच गया।

राम भइया! आओ,
हम तुम्हारा परिचय
अपने नये दोस्तों
से कराएँ।

ओह!









इसी तरह देव ने अपने तीसरे विपक्षी को भी घुटकी बजाते ही मंच पर लम्बा कर दिया।



और फिर— अपने गुप में देवकुमार विजयी रहा।



उसके बाद ही गुप के छात्रों का भापस में मुकाबला आरम्भ हुआ। इन गुप में राम था। उसने भी देव की तरह अपने प्रतिद्वन्द्वी को एक-एक कर पलक झपकते ही बड़ी आसानी से जमीन सुंघा दी।



ही गुप में शामिल आनन्द ने भी एक से बढ़कर एक जोरदार दिखाए...



... और अपने तीनों विपक्षियों को पकड़ सकते ही नाक आउट कर दिया।



रहीम को भी अपने गुप के विपक्षियों को हराते ज्यादा देर नहीं लगी।

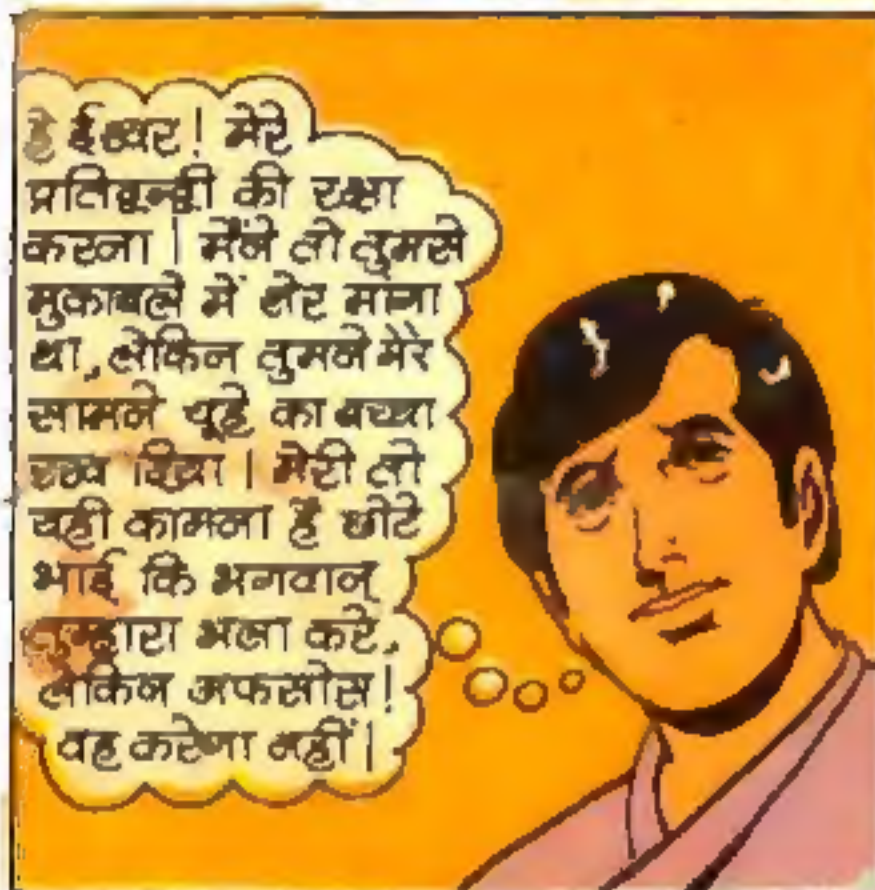




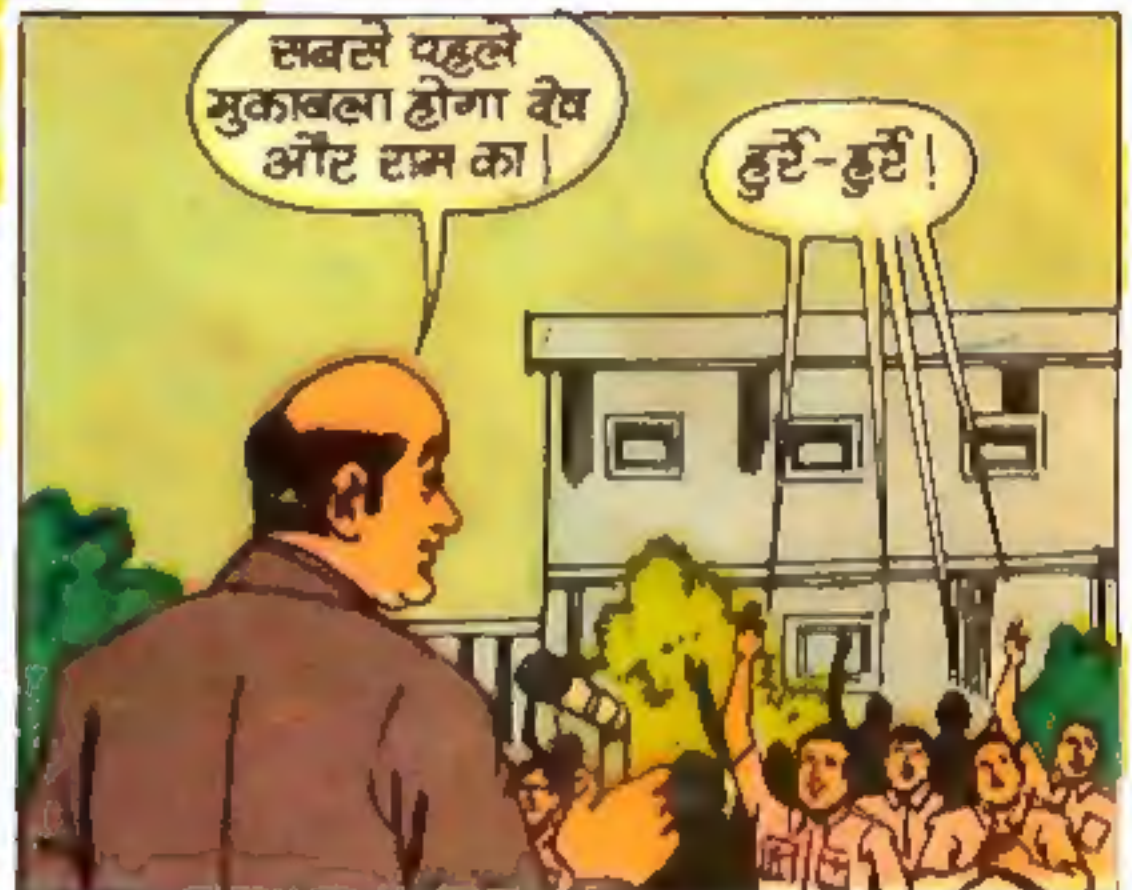
देव एक बहादुर लड़का है। निःसंदेह उससे मुकाबला काटे का रहेगा और शायद काफी रोमांचक भी।



आज मैं इस जिंदादिल आनन्द की सारी जिंदादिली निकाल दूंगा। कमखर्त, हर समय इस तरह चूकता रहता हूँ, जैसे इसका कोई सली नहीं। मुझे तो जैसे यह कुछ समझता ही नहीं है।



हे ईश्वर! मेरे प्रतिद्वन्द्वी की रक्षा करना। मैंने तो तुमसे मुकाबले में लेट माना था, लेकिन तुमने मेरे सामने पूरे का बचरा रख दिया। मेरी तो चही कामना है छोटे भाई कि भगवान् तुम्हारा भला करे, लेकिन अफसोस! वह करेगा नहीं।



सबसे पहले मुकाबला होगा देव और राम का।

हुट्टे-हुट्टे!



क्यों सारो, क्या ख्याल है तुम्हारा। इस राम और देव में कौन भारी पड़ेगा।

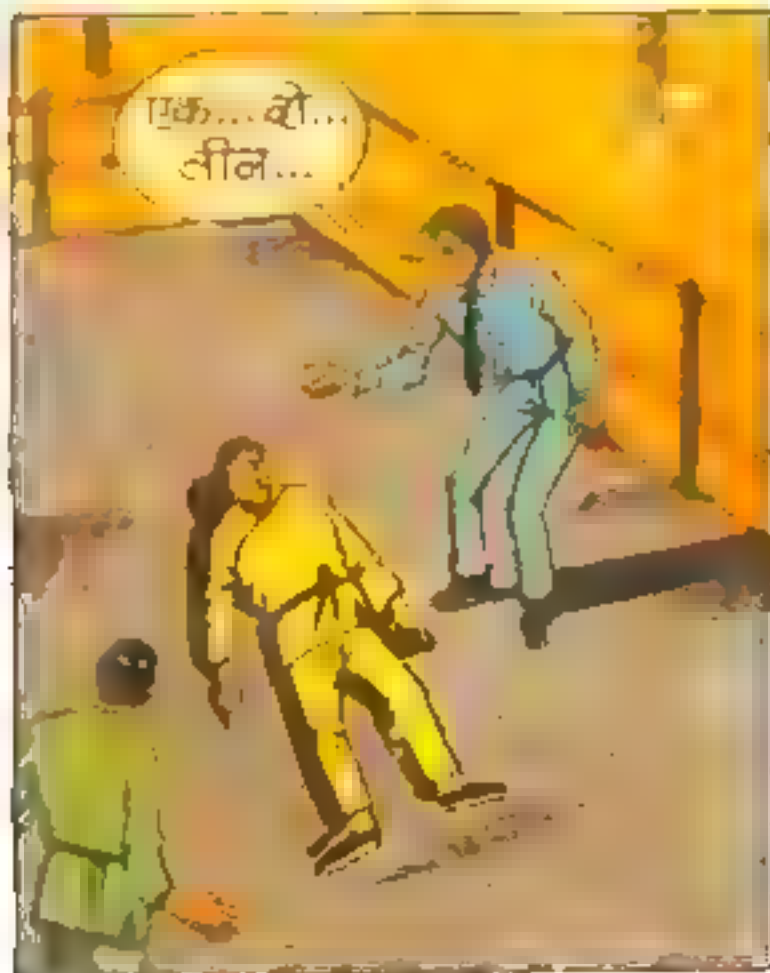
जम्हू भइया, हमारे विचार से तो देव पर राम ही भारी पड़ेगा।

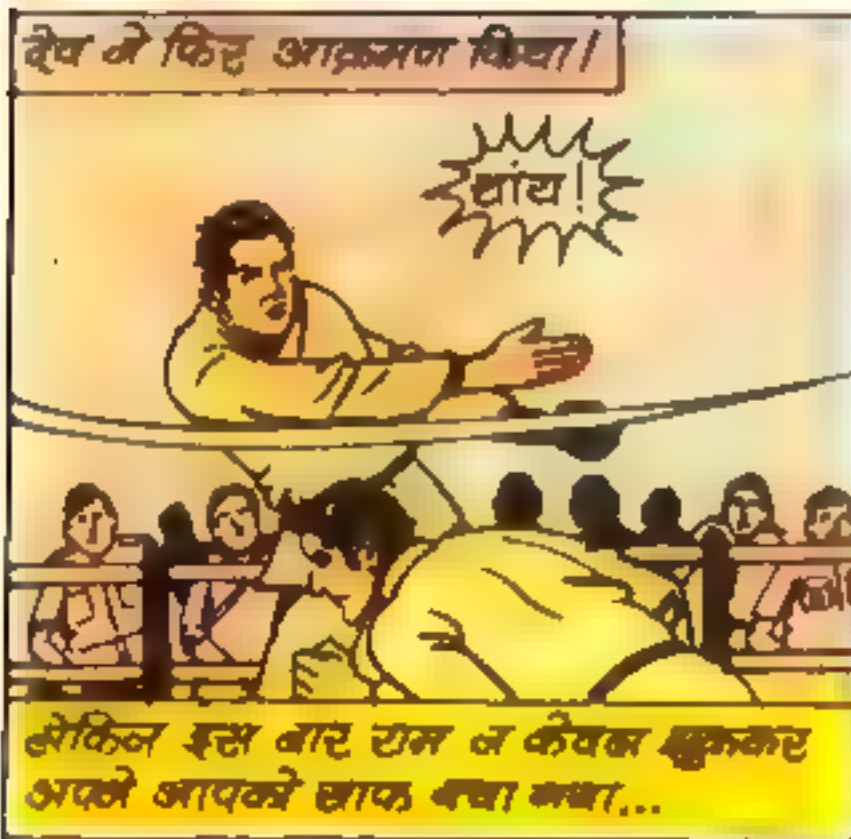


लेकिन रमेश, देखने और ताकत में देव भी कुछ कम नहीं है। देखा नहीं, उसने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को कितनी सुगमता से पराजित किया था।

वह तो ठीक है, लेकिन राम का गूहो-कराटे में कोई जवाब नहीं है। वह तो अकेला देव जैसे बस पर भारी पड़ सकता है।

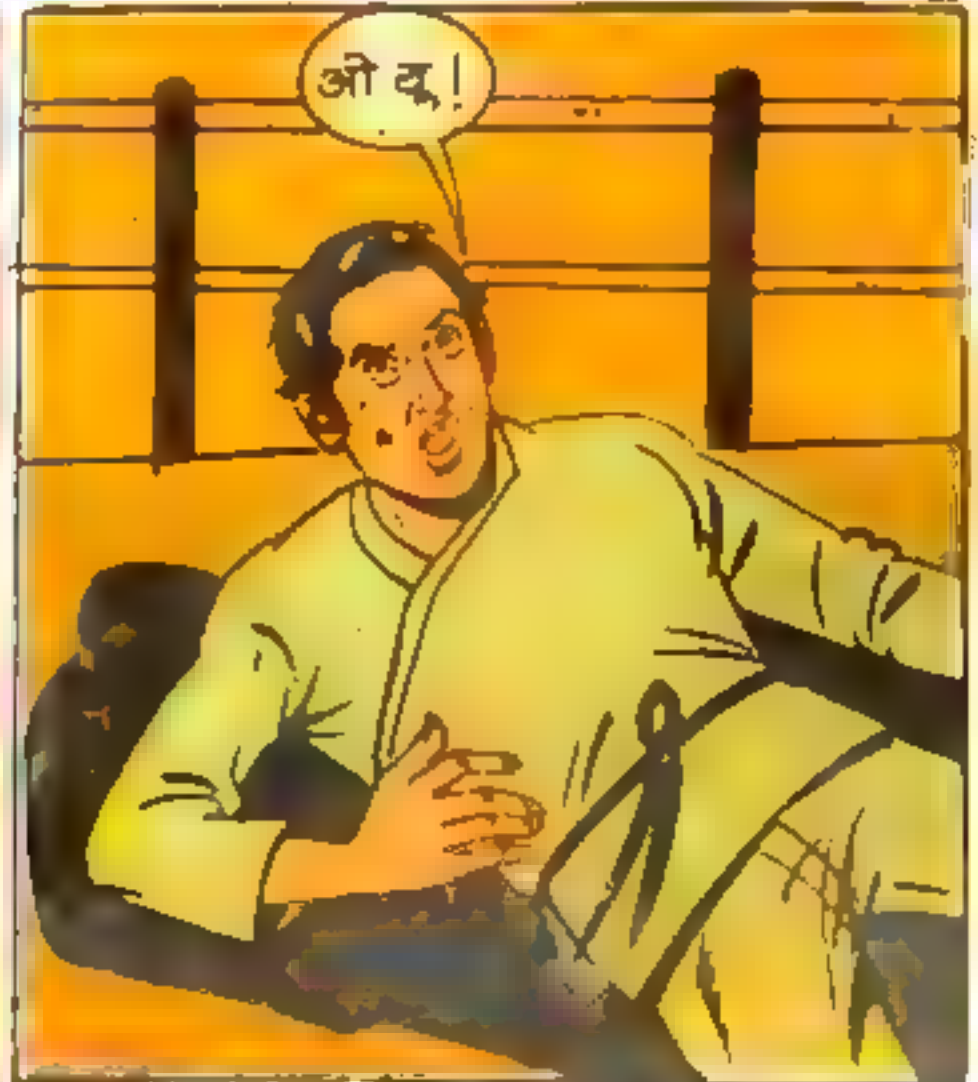
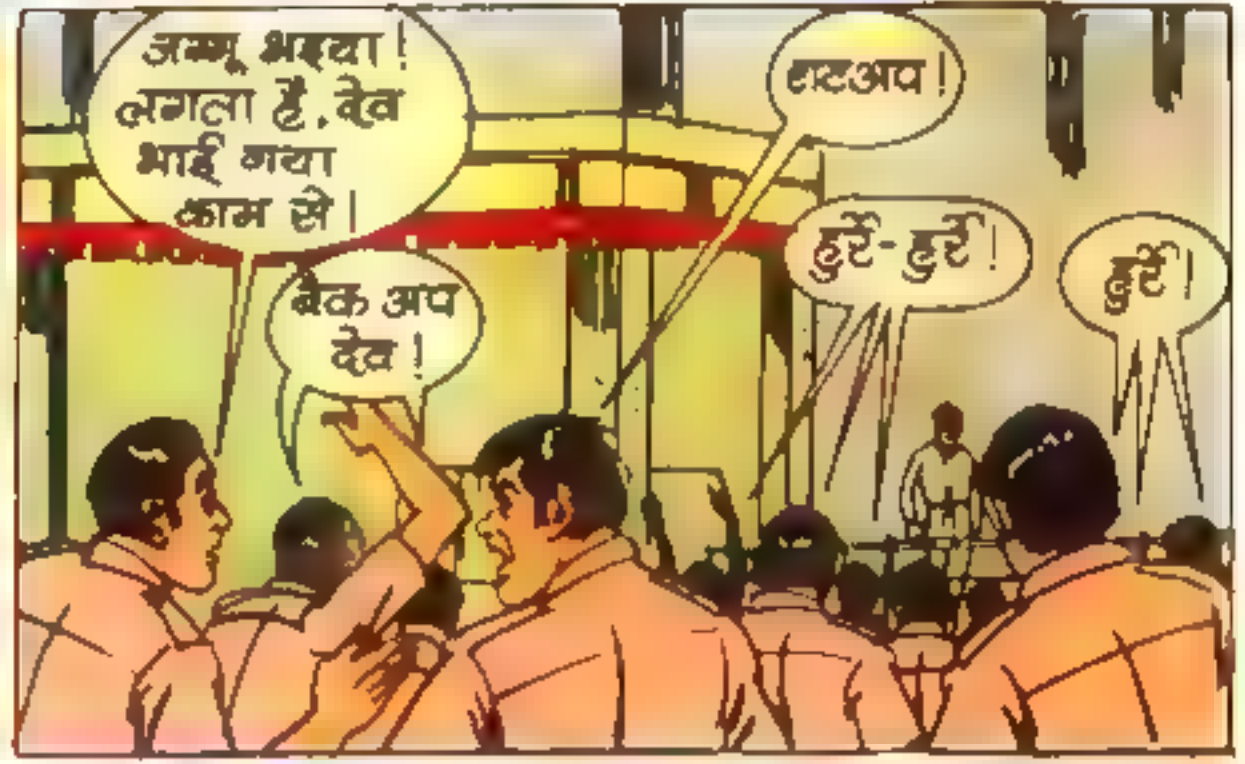
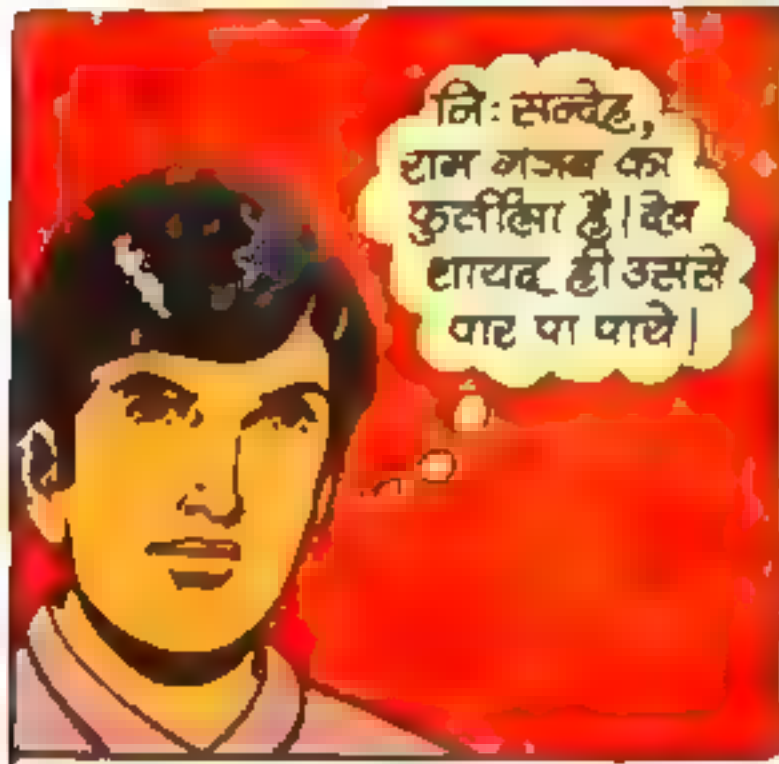
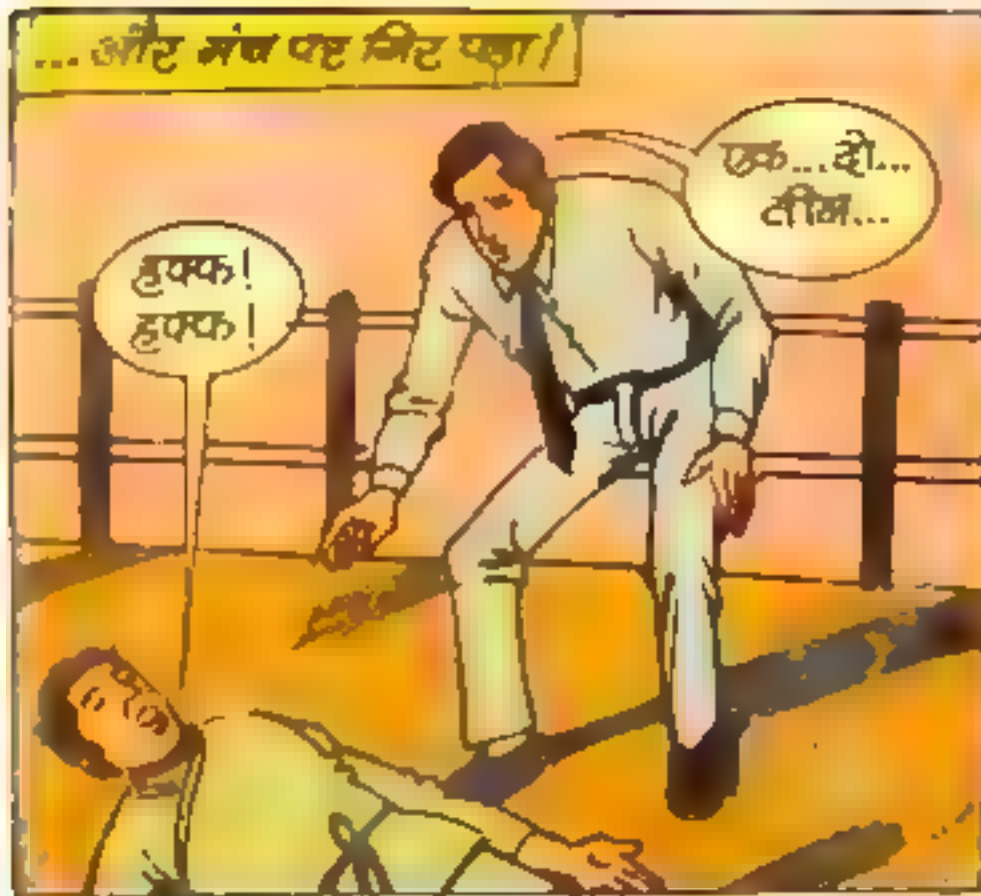


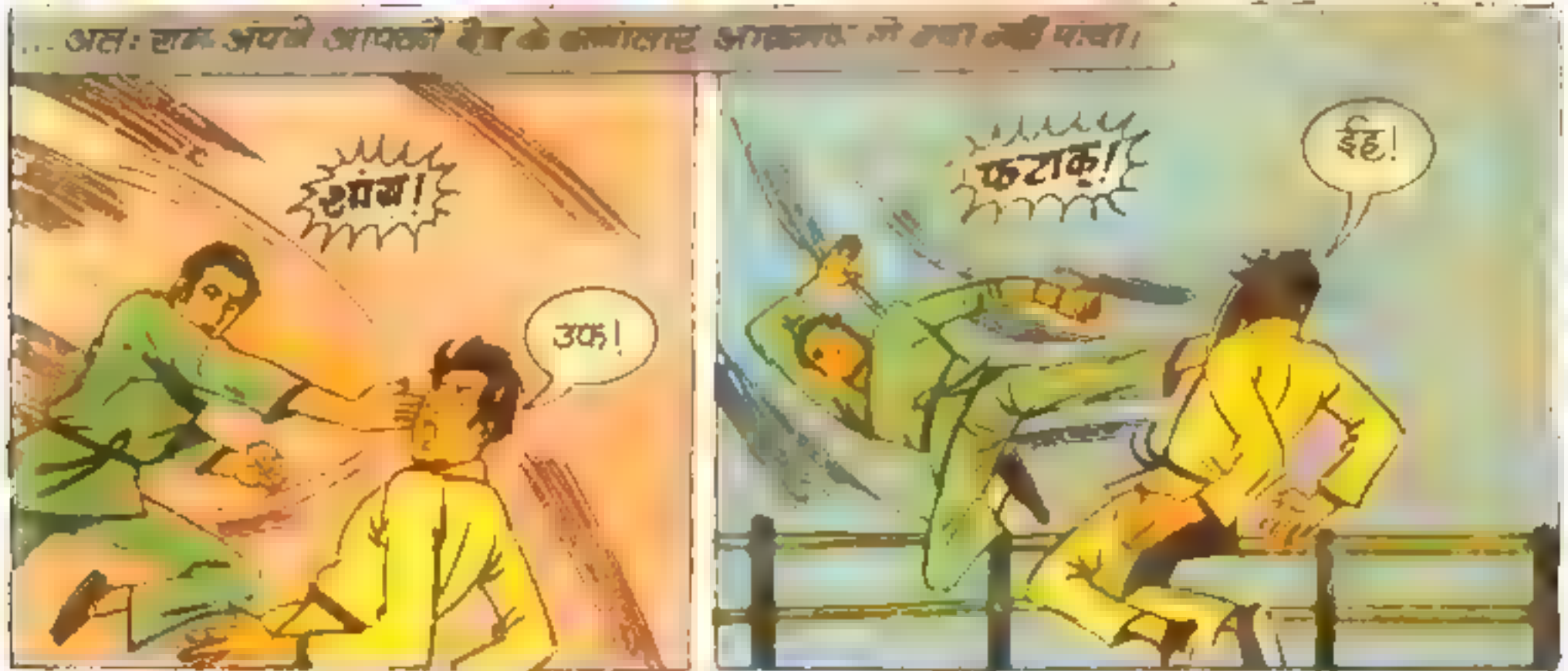




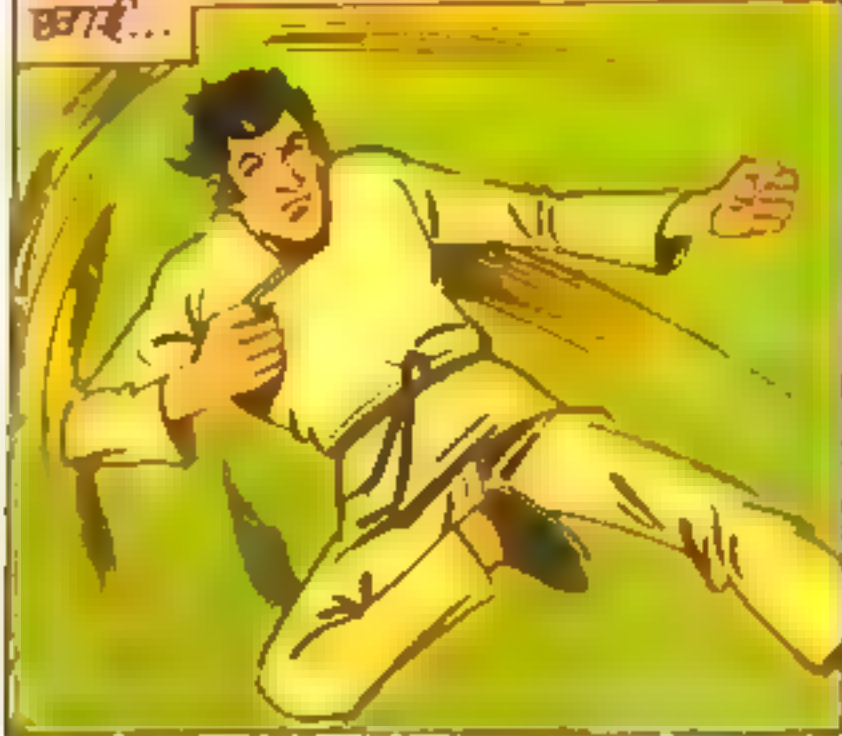
फिर राम ने रैम पर एक के बाद एक लाइटलीड प्रहार किये।







पहला बार कल्ले के साथ ही राम ने बिना पैर जमीन पर रखे हवा में ही कलाबाजी छाई...



... और इस बार फिर उसके दोनो पैर पूरी ताकत के साथ देव के सीने से टकराये!



और इस बार जोर से बच पर मिरा तो उस नुकील का!



जबू अब्बा, यह बाजी तो राम जीत गया।

हा, और यदि दूसरा मुकाबला भी उसका साथी जीत गया तो तुम चारों चार चार जूते खाने के लिए लैवार हो जाओ।



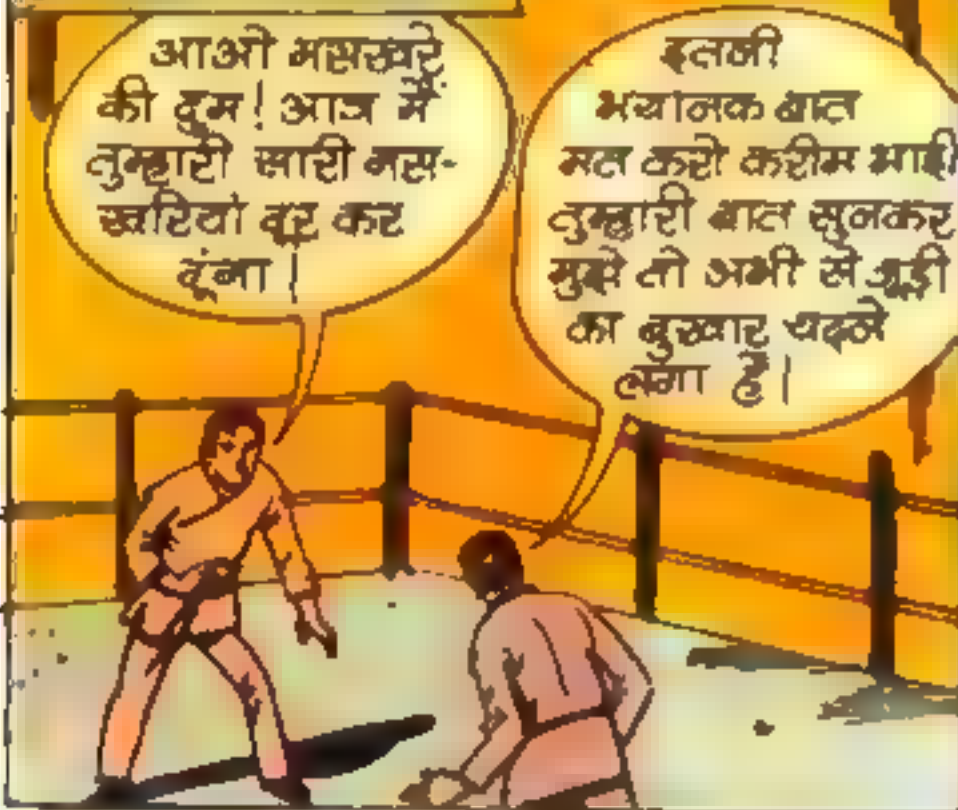
जबू की बात सुनकर उसके बाले साथियों का चेहरा गंभीर रह गया।

इस शौतान से दोस्ती करके तो हमने अपनी जान को मुसीबत मोख ले ली। काश! इसे रहीम की तरह कोई और भी सबक सिखा पाता।



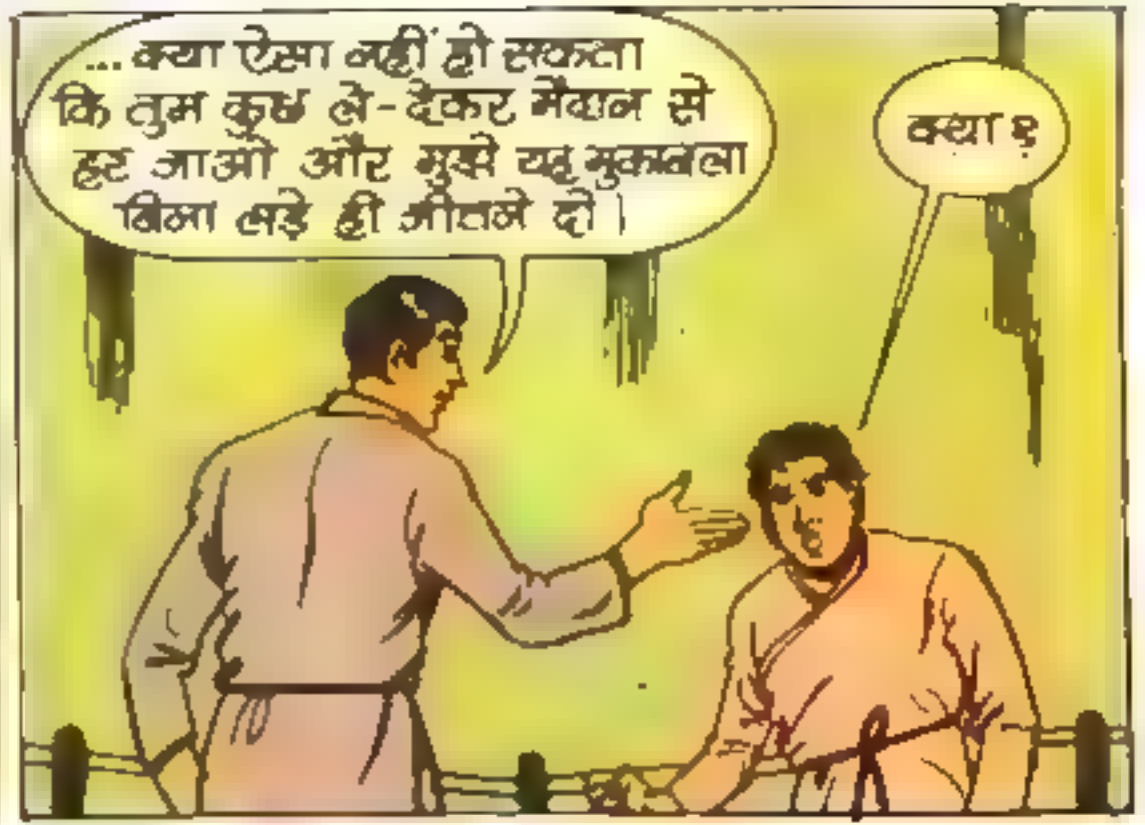


हीन ही रहीम और आनन्द के बीच दूसरा
मुकाबला आरम्भ हुआ।





ओह! सलीम भाई, मेरा मत-
लब है रहीम भाई,
मुझमें तुमसे मुका-
बला करने की
मला कहां हिम्मत
है...



...क्या ऐसा नहीं हो सकता
कि तुम कुछ ले-देकर मैदान से
हट जाओ और मुझे यह मुकाबला
बिना लड़े ही जीतने दो।

क्या?



न...लाराज मत
हो छोटे भाई। वरअसल,
मैं तुम्हारी जगह तुम्हारे
बड़े भाई राम से मुकाबला
करने में ज्यादा उत्सुक हूँ।
अगर तुम मेरी बात मान
जाओ तो कसम तुम्हारी
उल्लू जैसी खोपड़ी की,
मैं तुम्हारा यह एहसास
कभी नहीं भूलूंगा।

अबे चूहे की
औलाद, मुझसे
तो मुकाबला करने
की तुझमें हिम्मत
नहीं और सोच
रहा है राम से
मुकाबला करने की।
वह, मैं तेरी कसूर
जैसी खोपड़ी को
अभी सही रास्ते
पर लाता हूँ।

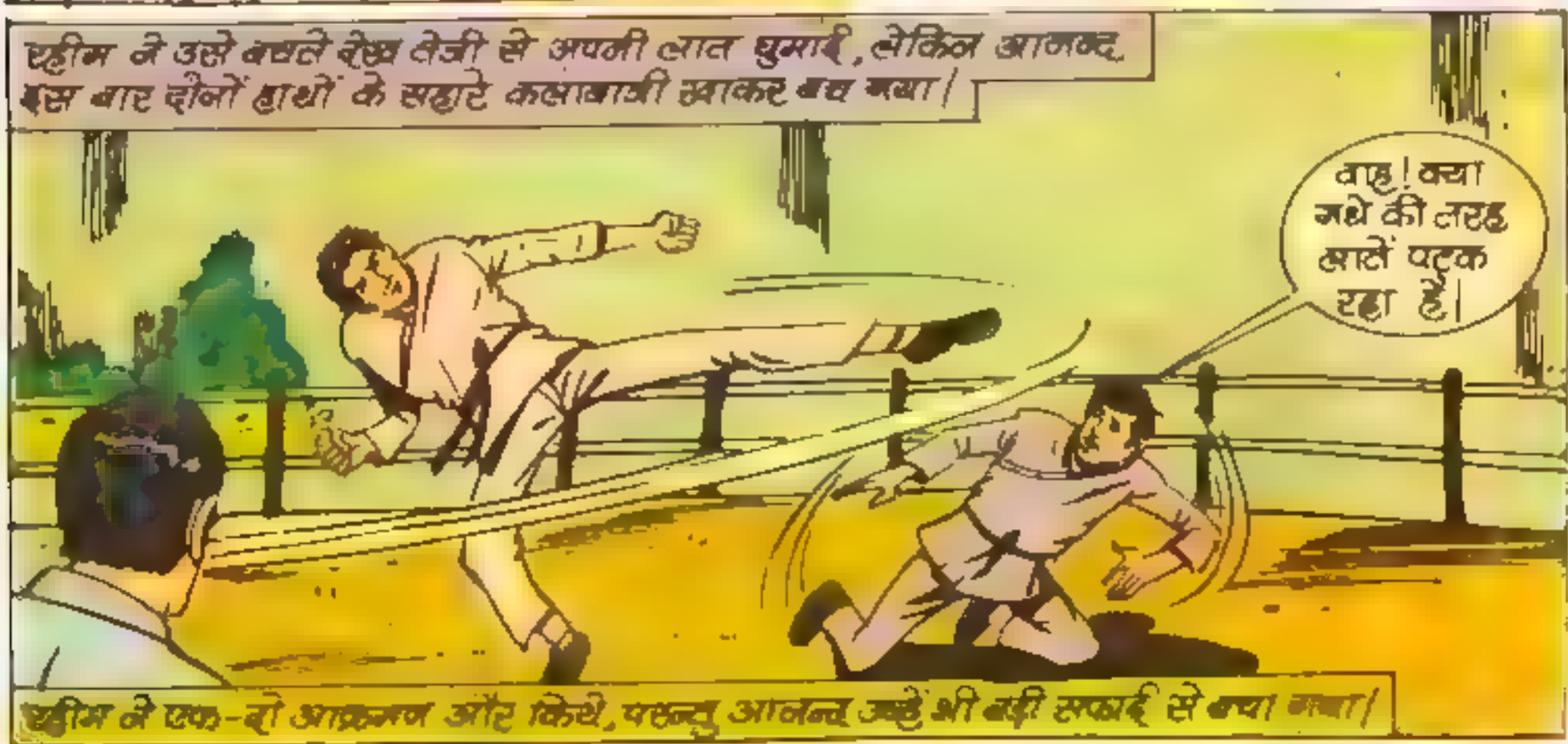
कहने के साथ ही...



...रहीम ने अपना बाध पूरी शक्ति से मुकाबले
लेकिन आजन्म घीले के समान
चौकला था। वह तुरन्त नीचे बैठकर
अपने आपको साफ बचा गया।

हांव!

आह!
बच गया।



रहीम ने उसे बचले रेश लेजी से अपनी लात घुमाई, लेकिन आजन्म
इस बार दोनों हाथों के सहारे कलाबाजी साकर बच गया।

वाह! क्या
जधे की तरह
झालें पटक
रहा है।

रहीम ने एक-दो आक्रमण और किये, परन्तु आजन्म उन्हें भी बड़ी सफाई से बचा गया।

और रहीम अपनी इस असफलता व आनन्द के कटाक्ष सुनकर धीरे ही आपे से बाहर हो गया।

अब मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा।

नहीं-नहीं छोटे भाई। ऐसा मजबूत हरमिज मत करना, वरना मेरे माता-पिता निःसंतान हो जाएंगे, क्योंकि मैं उनका इकलौता बेटा हूँ।



सामोश मूर्ख!



क्रोधित ही रहीम ने भयानक ढंग से अपना हाथ घुमाया और—

अरे...ई...ई... मैं तो गिर रहा हूँ, मुझे संभालो छोटे भाई।



लेकिन वह सबकुछ आनन्द का हास-पति हास अभिनय था।

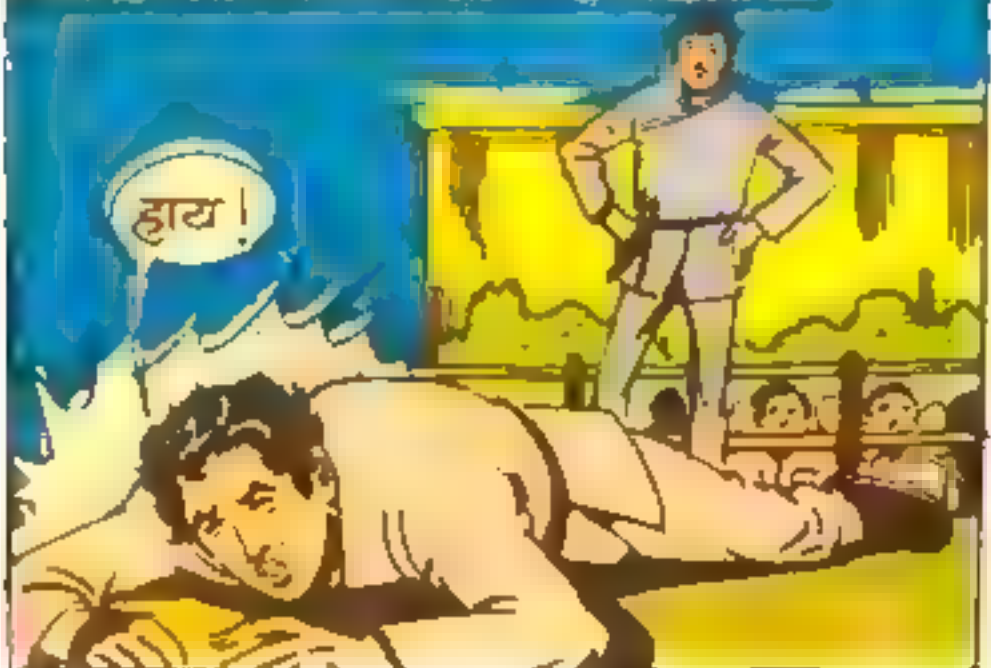
लेकिन रहीम, आनन्द के अभिनय की जरा भी नहीं भांप पाया और उसे गिरता समझकर हक में उछलकर उसे पकड़ने किंक मारनी चाही—

अब बच मूर्खानन्द।



अरे नहीं...!

लेकिन तभी आनन्द ने इतनी मजबूती की फुर्ती के साथ अपने आपसे रहीम की किंक से बचाया कि रहीम की इसका आभास उस समय हुआ जब वह मंच पर मुंह के बल गिरा।

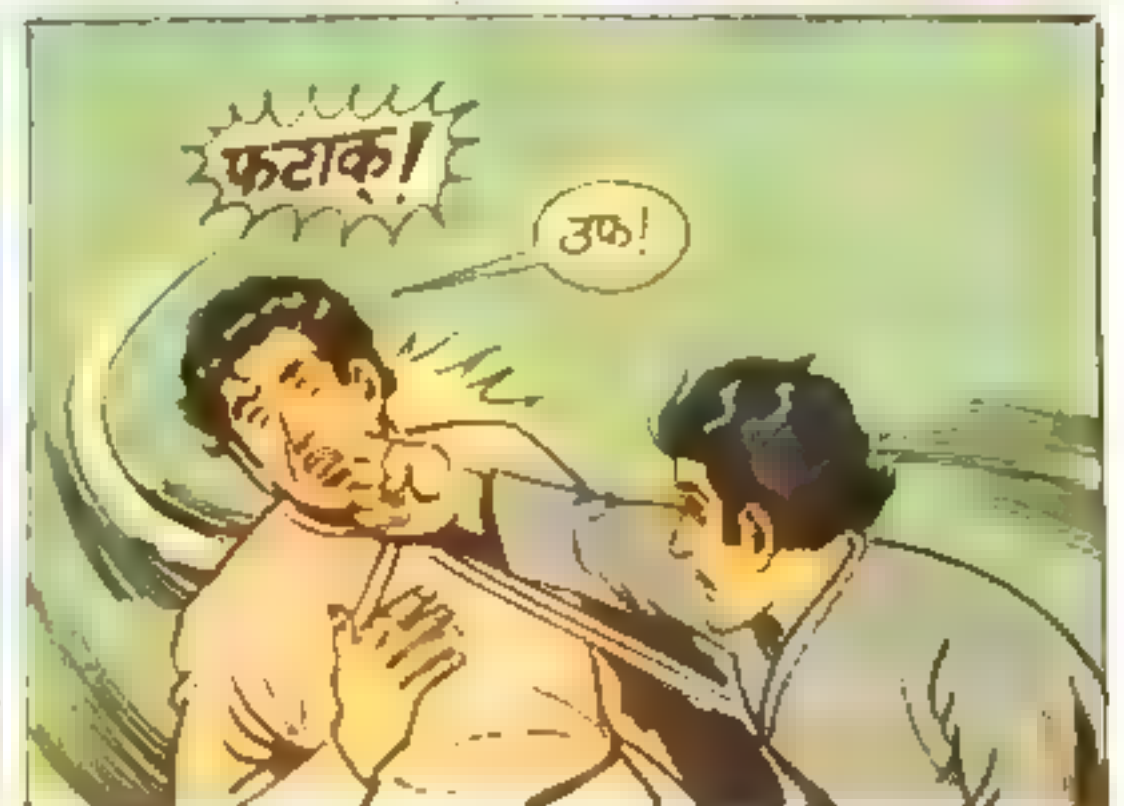
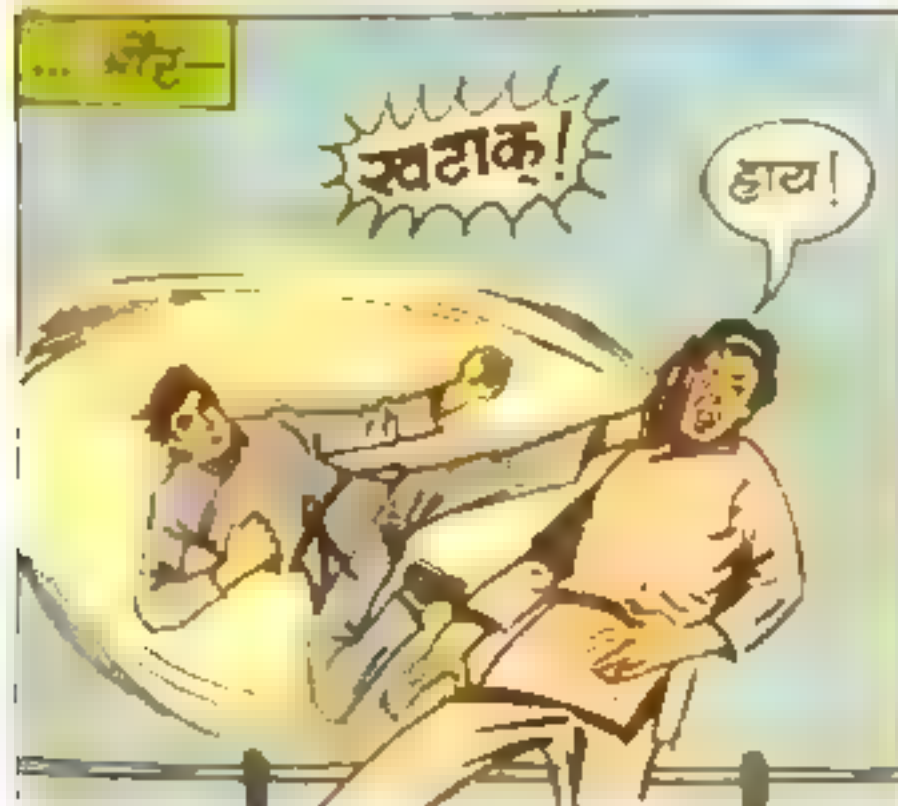
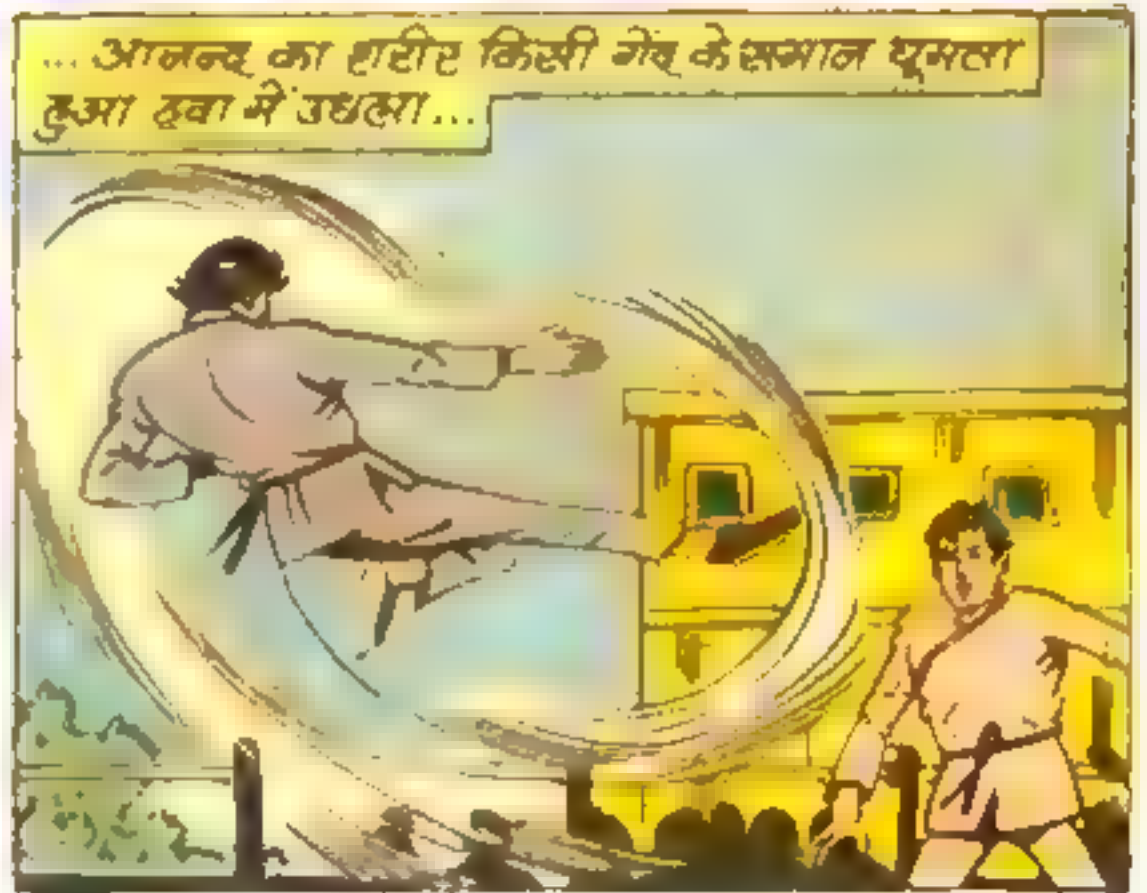
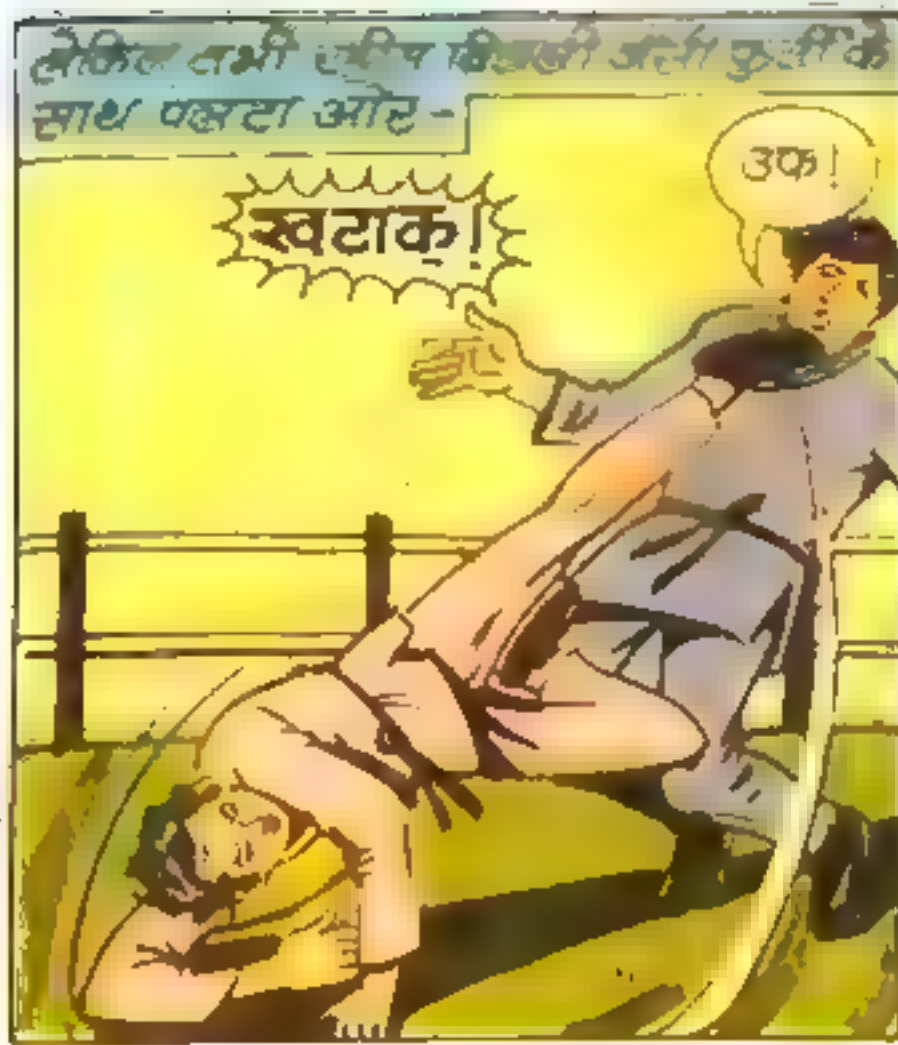


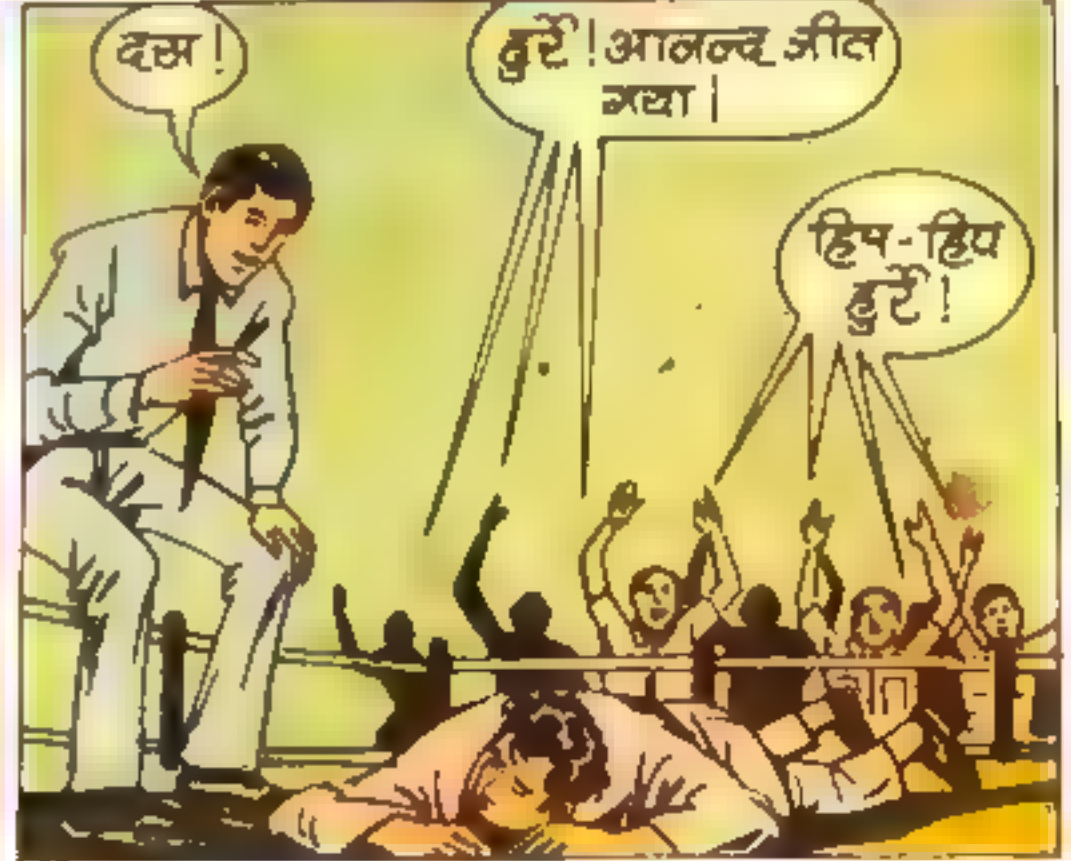
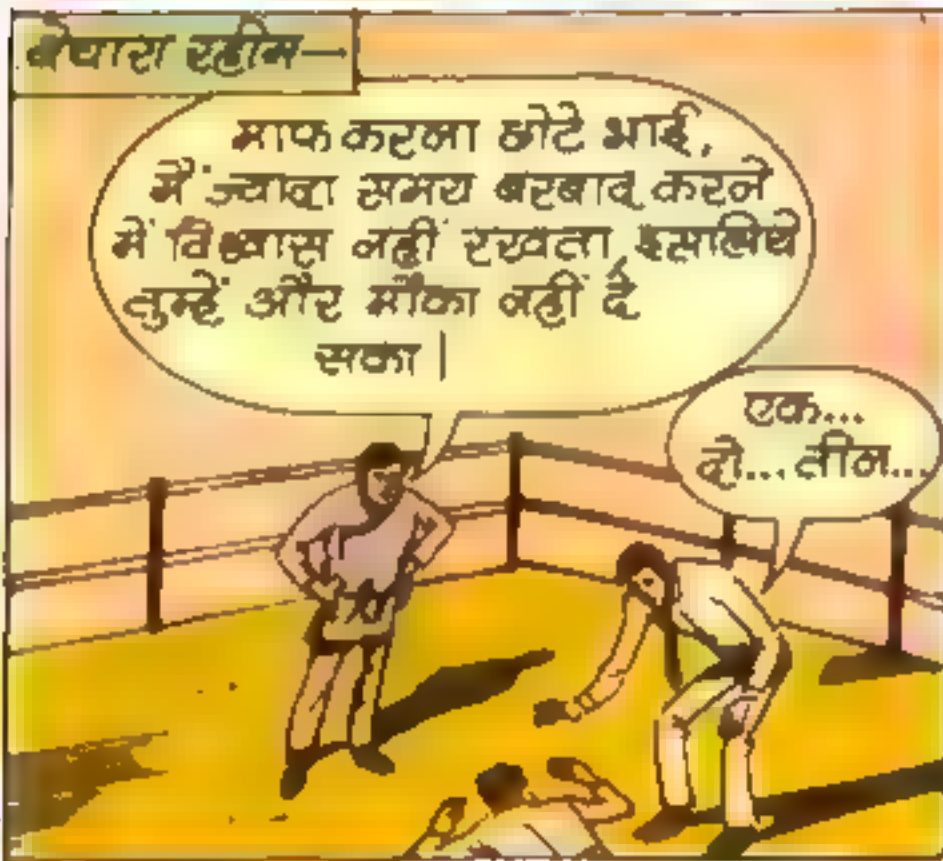
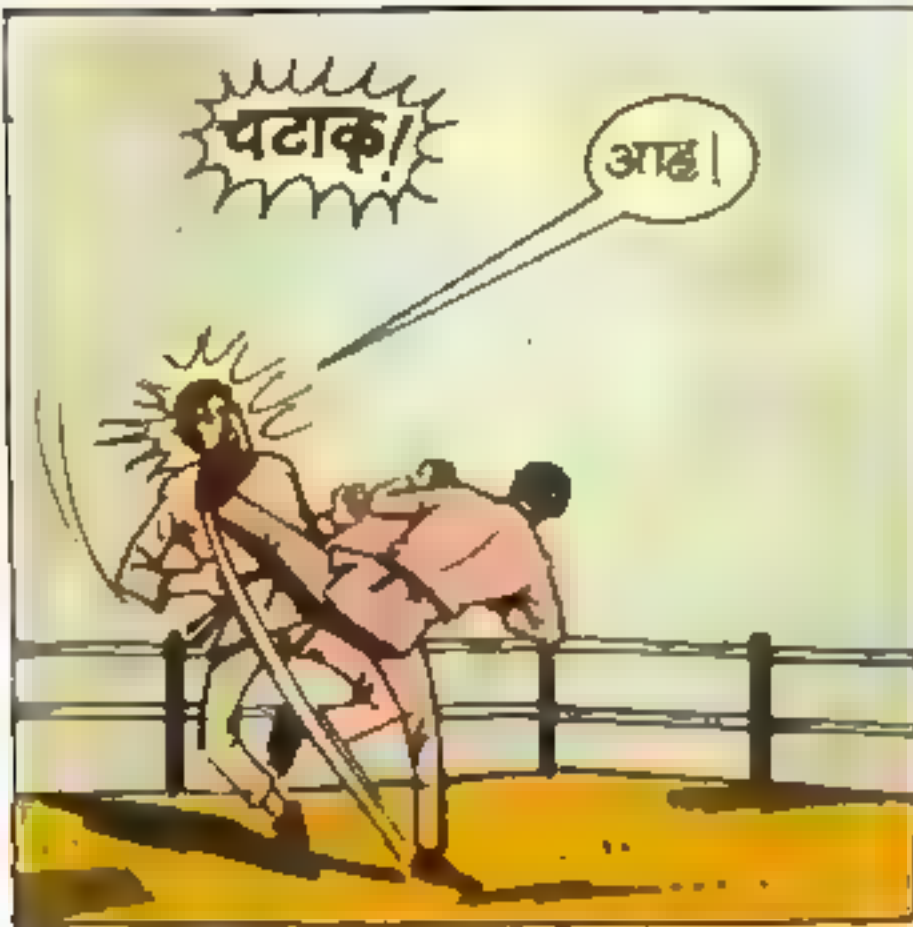
हाय!

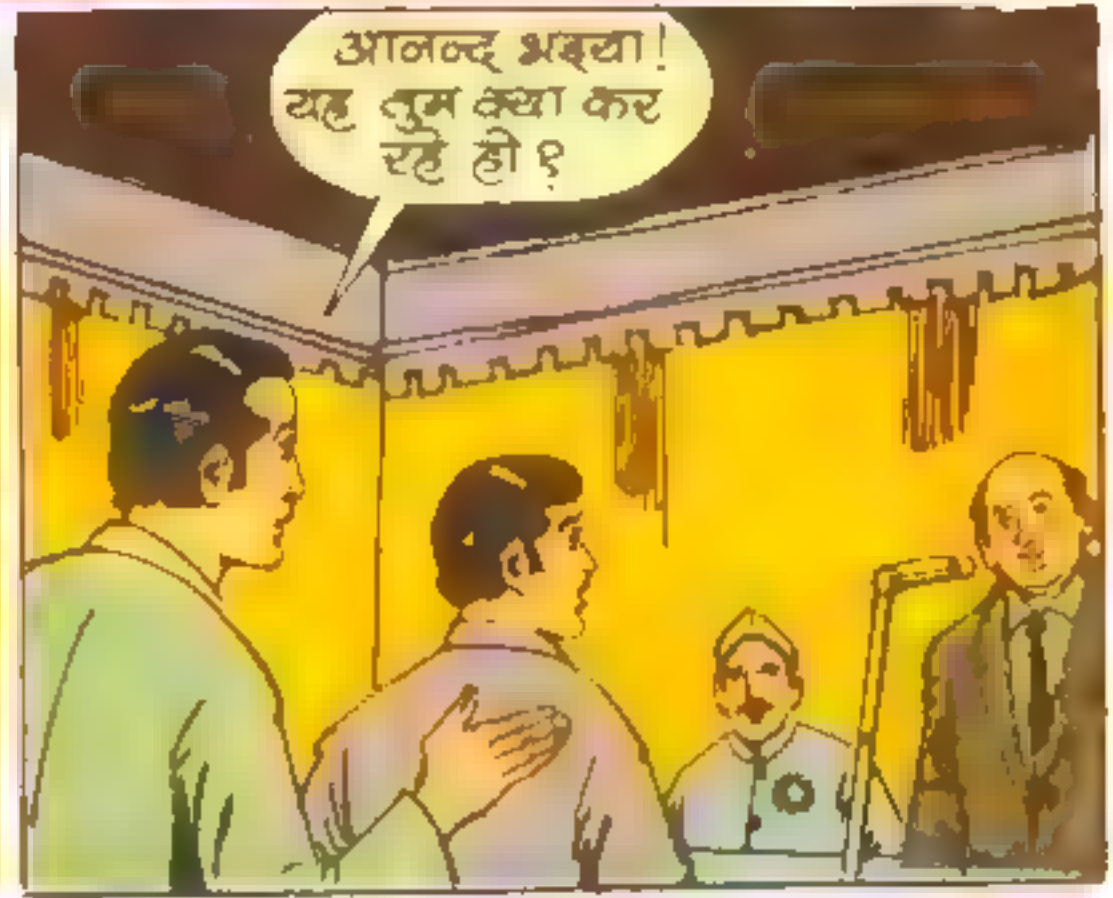
ज्यादा चोट तो नहीं आई नहीब भाई! माफ करना, मैंने तो पहले ही तुम्हें बंदरों की तरह उछल-कूद करने से मना किया था, लेकिन...

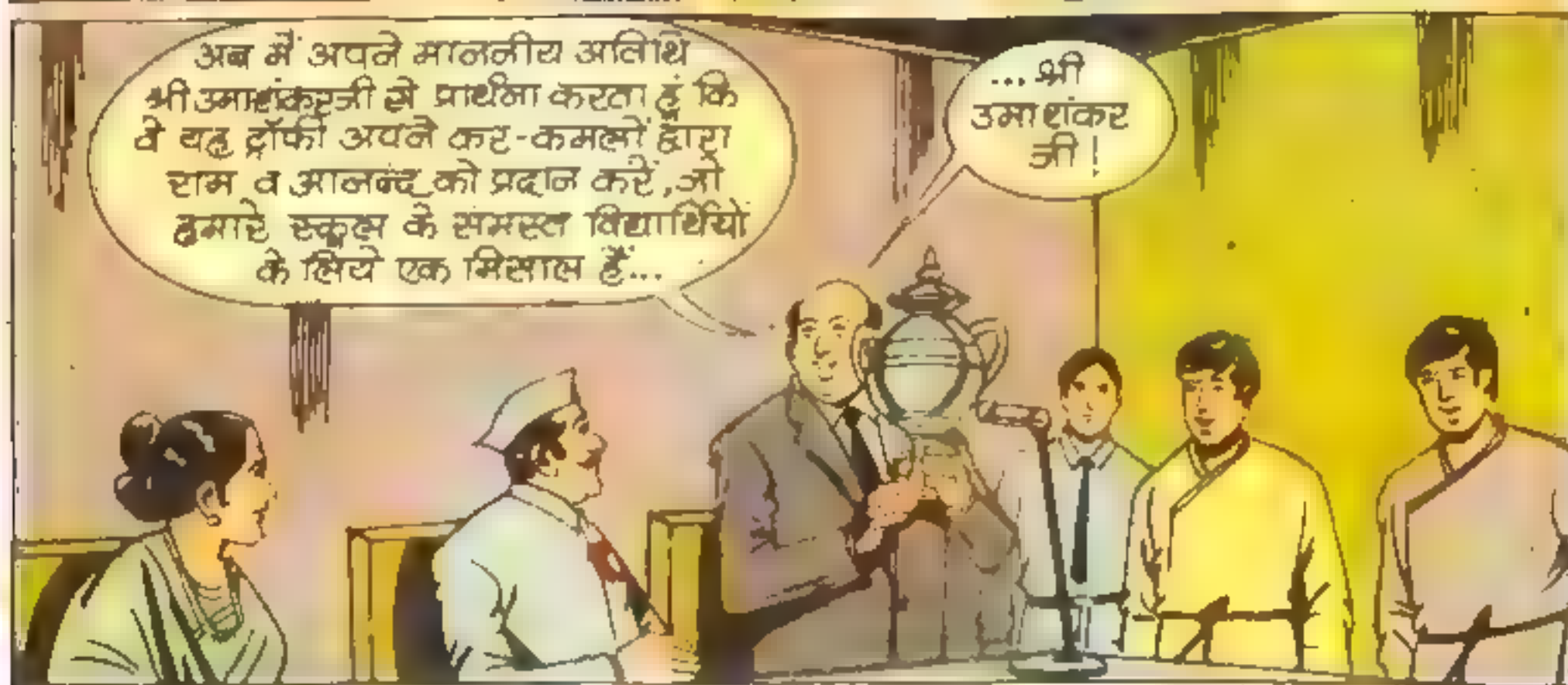
गुरी-ई-ई!

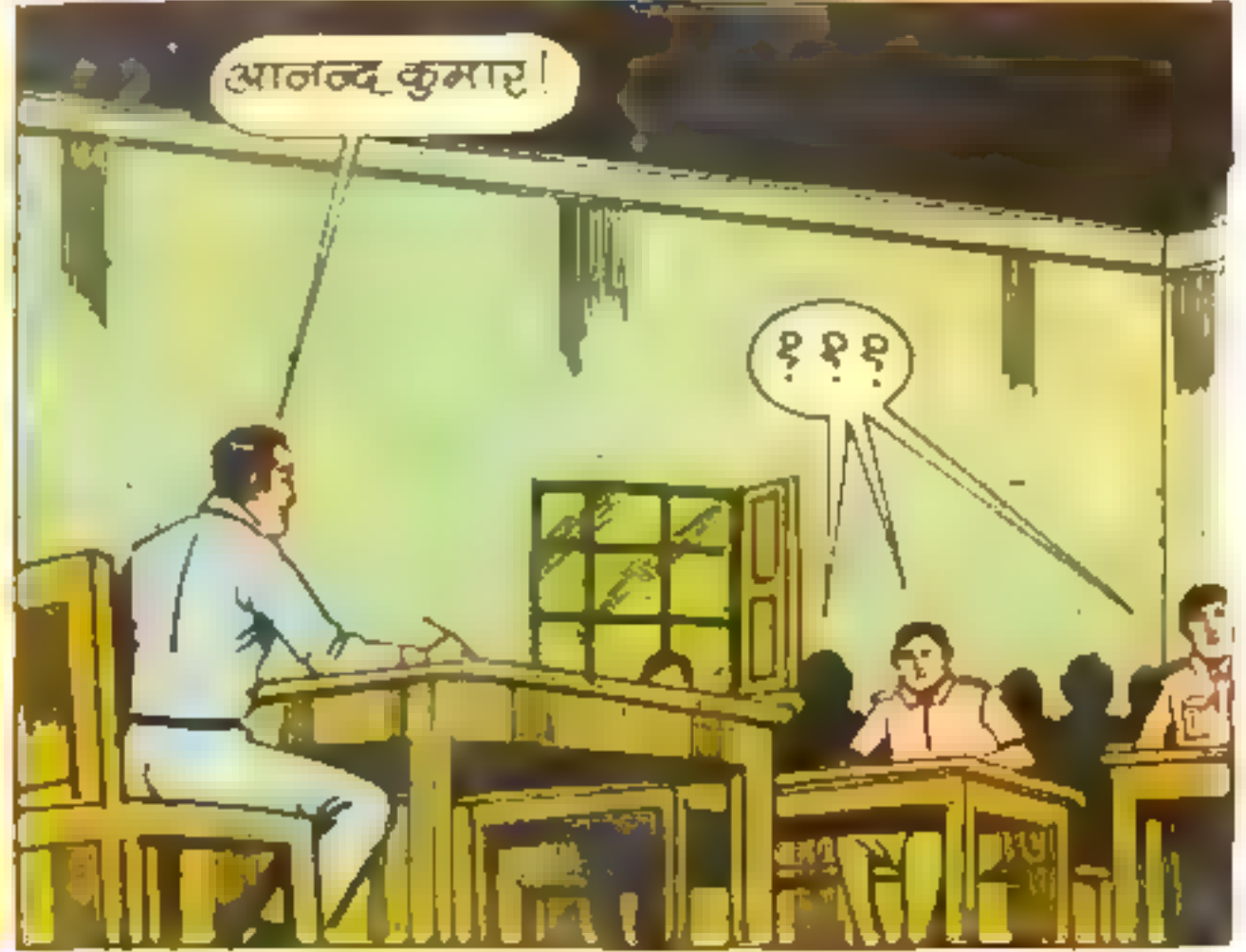
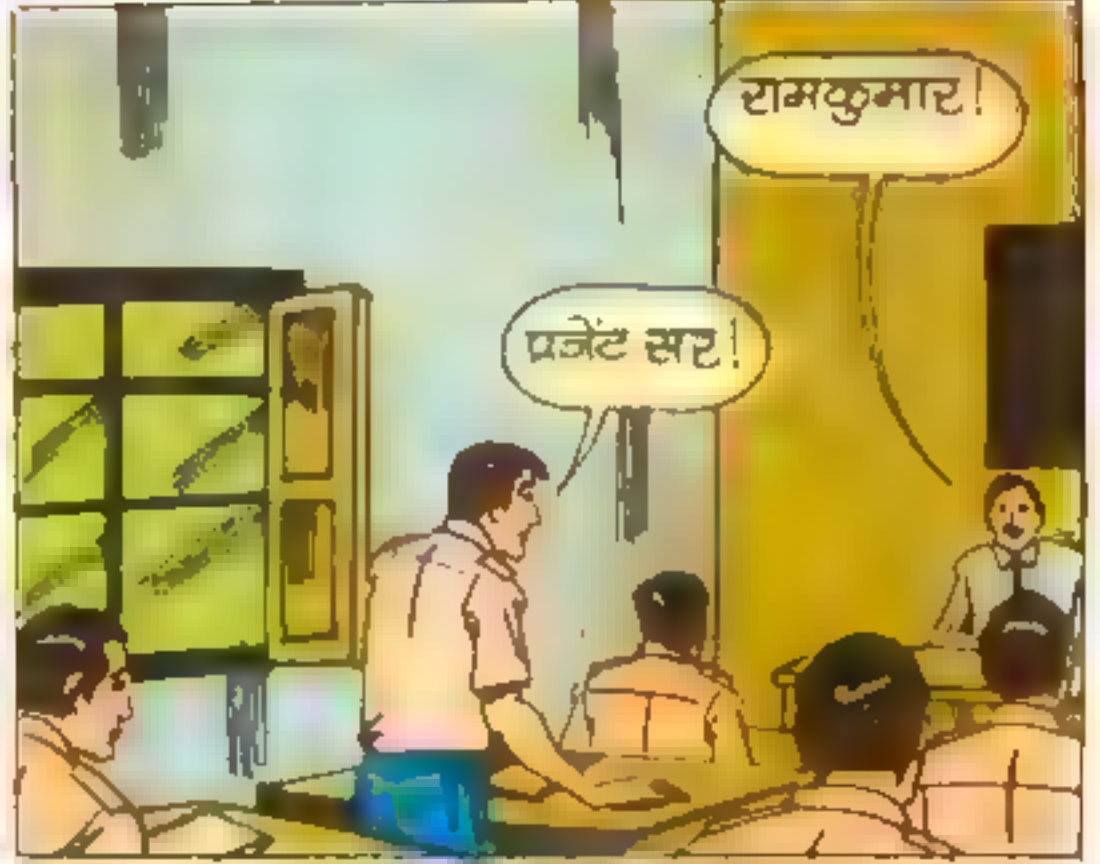
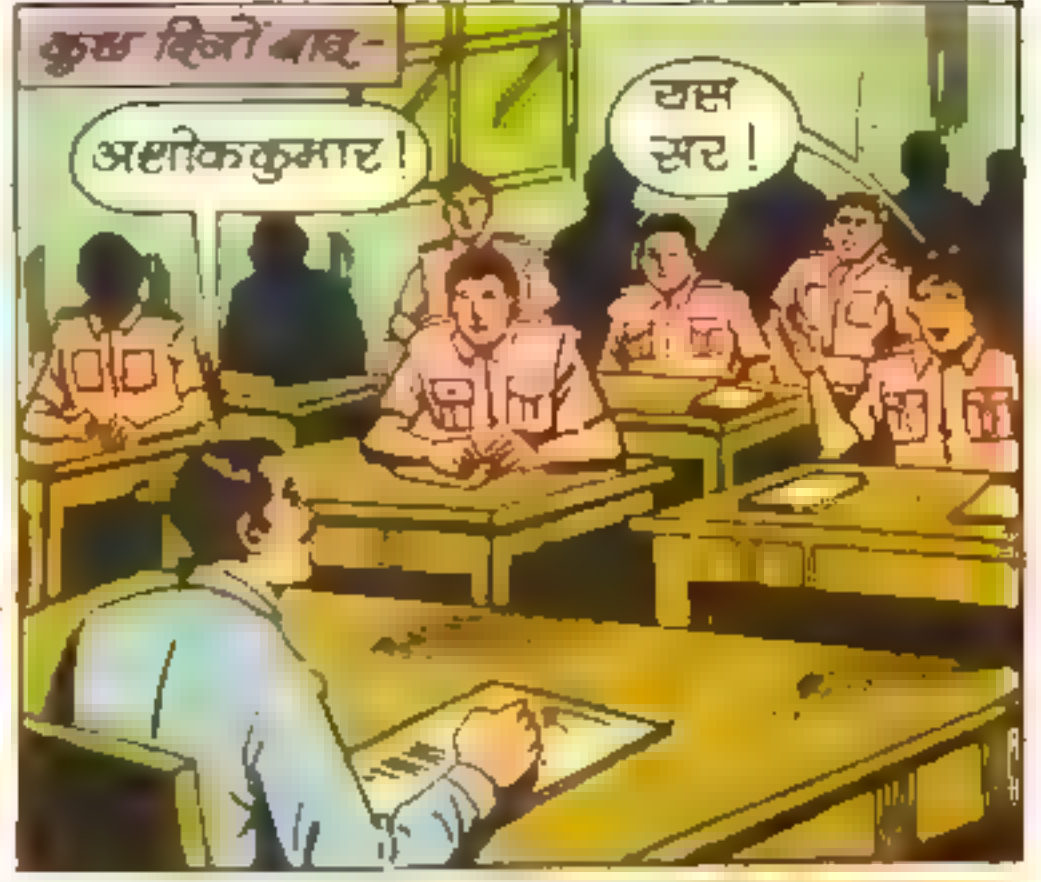


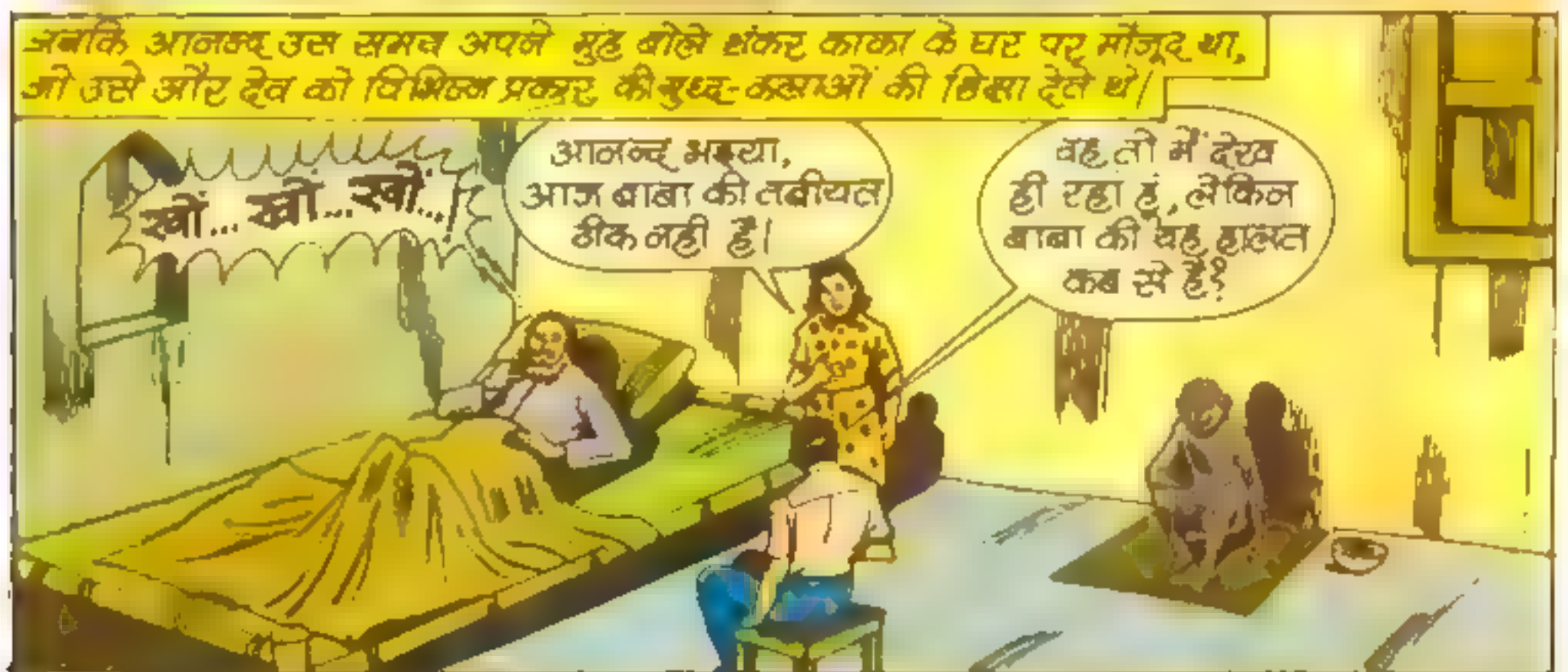
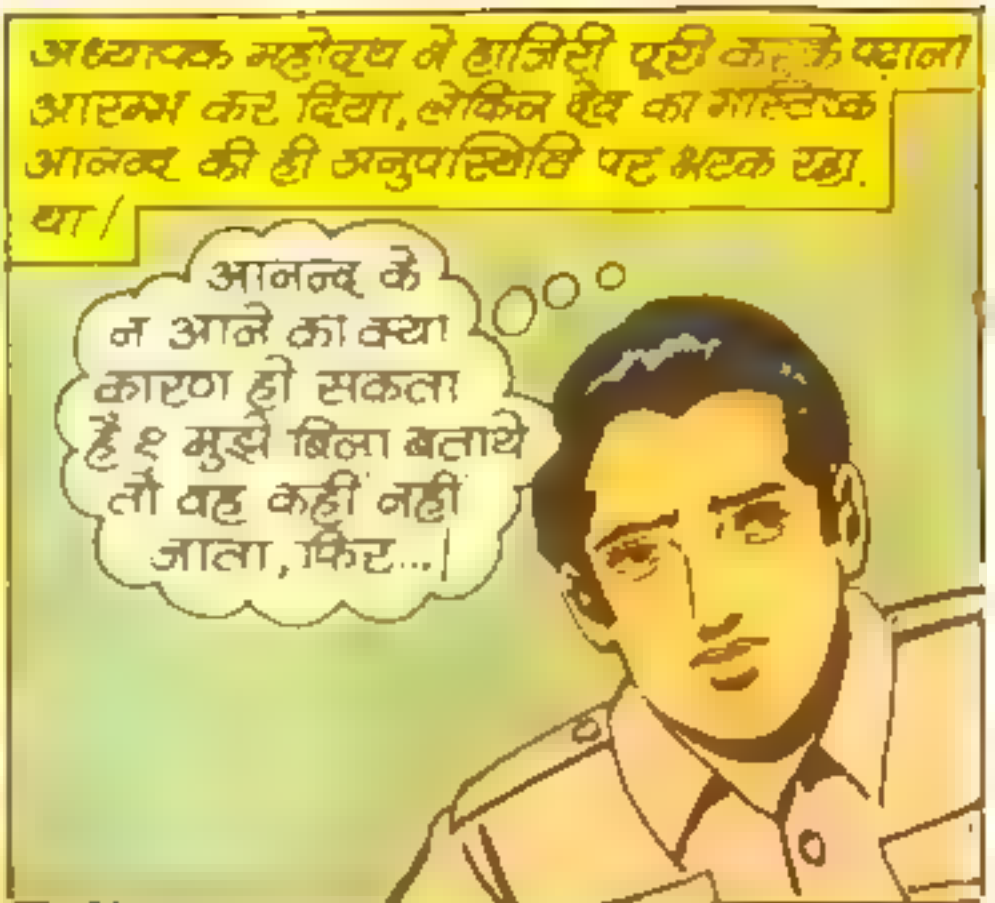














डॉक्टर ने हांकर काका का निरीक्षण किया।
सत्यवात् खाई आदि रोगों के बाव जोसे-

सुनो आमन्द!
इन्हें बहुत अधिक कम-
जोरी है। अतः एक सप्ताह
तक इन्हें पूर्ण रूप से आराम
करना होगा। उचित होगा कि
ये दिमाग पर कम से कम
जोर डालें।

ओह!
वानी एक
सप्ताह
तक और
काका
अपने काम-
धंधे पर
नहीं जा
सकेंगे।

फिर डॉक्टर की विदा करने के बाद-

अब क्या सोचा
तुमने भइया! बाबा तो
तुम लोगों से पैसे लेने नहीं,
जबकि घर में खाने की
अन्न का एक दाना भी
नहीं है।

तुम चिंता मत
करों बहुत! मैंने
एक उपाय सोच
लिया है। मुझे विश्वास
है, उस तरीके
पर बाबा को कोई
एतराज नहीं होगा।

आहा!
क्या उपाय
सोचा है तुमने
भइया?

अरे!
तुम दोनों वहां
खड़े होकर क्या सुसुर-
पुसुर कर रहे हो। जरा
मुझे भी तो बताओ।
खों-खों-खों!

बाबा, आपकी
जगह में लोगों को
लमाहा दिखाकर पैसे
कमाऊंगा और सरसा
भी मेरे साथ रहेगी।

अ...
लेकिन...!

बस बाबा, अब मैं आपकी
एक नहीं सुनने वाला। जो कमाई
में लाऊंगा, उसमें सरसा की भी मेहनत
होगी। अतः उसे लेने में आपकी कोई
एतराज नहीं होना चाहिए।

ठीक है
बेटा। जैसा तुम
उचित समझो।





- आनन्द ने सरला के साथ मजमे में क्या-क्या तमामो बिछाए ?
- अन्धू ने राम-रहीम से किस प्रकार अपने अपमान का बदला लिया ?
- क्या धालाक, लेकिन स्वयं को मूर्ख दर्शाने वाले आनन्द से रहीम की दोस्ती हो सकी ?
- क्या राम और देव में सुलह हो सकी ?
- देव के पिता छः वर्षों से कहाँ लापता थे ? क्या वे वापस घर लौटे ?
- इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये मनोज कॉमिक्स के

आनामी सैट में पढ़ें:-

‘अबल सीक्रेट एजेंट 00½ राम-रहीम’ का नवीनतम कॉमिक्स

